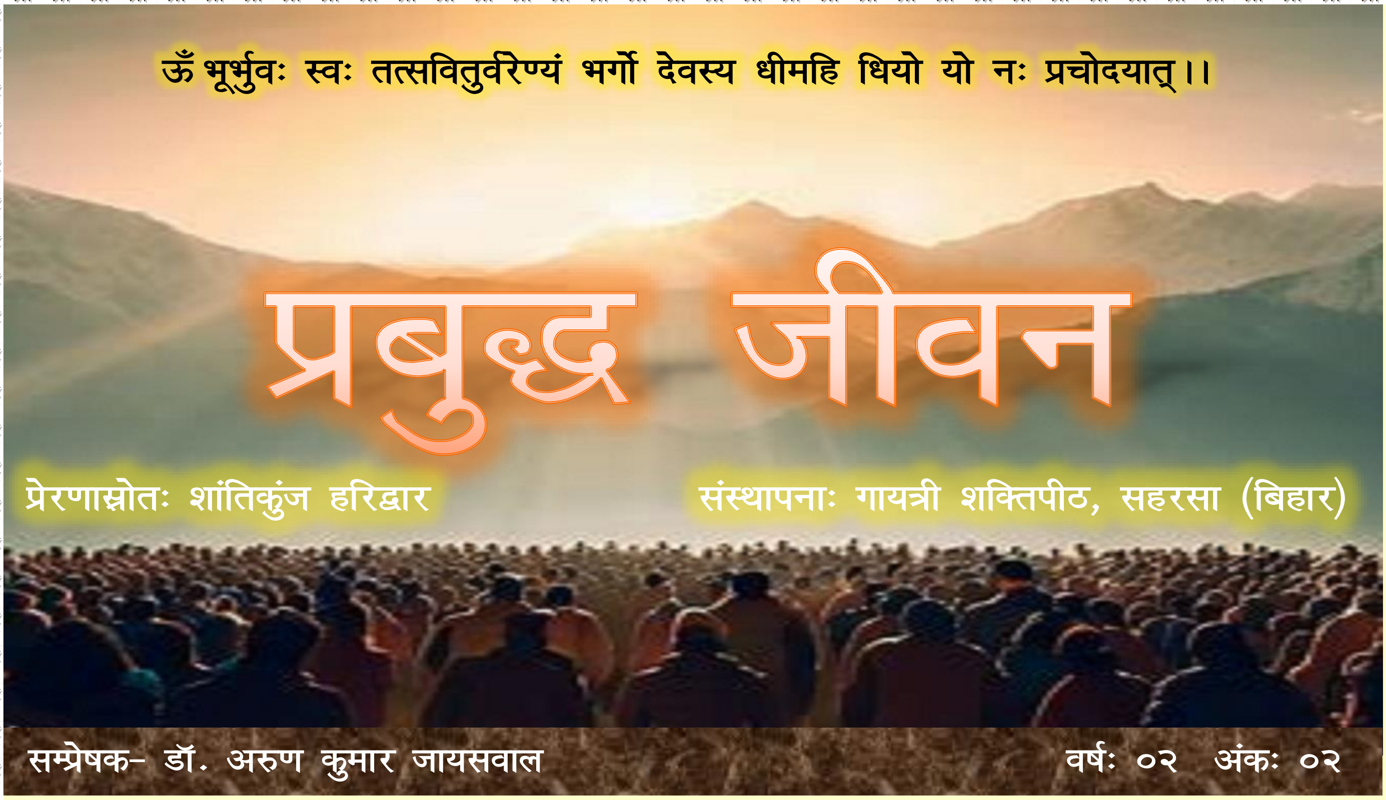

'प्रचोदयात्'

'प्रचोदयात्' ॐ बीजाक्षर वाले, भूर्भुवः स्वः- इन तीन व्यहृतियों वाले एवं तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्- इन नौ शब्दों वाले महामंत्र का अन्तिम नवां शब्द है। इस नवें शब्द में गायत्री महामंत्र की एवं गायत्री साधना की पूर्णता है। गायत्री महामंत्र के इन नौ शब्दों में नौ चक्रों को जाग्रत करने का सामर्थ्य है। इन्हीं से ब्रह्माण्ड के नौखण्ड जुड़े हैं। यह सब कुछ इतना विस्तृत-विस्तीर्ण एवं विराट है कि इसे समेटने की सामर्थ्य कागज के एक छोटे से टुकड़े में नहीं है।

अभी तो समय 'प्रचोदयात्' शब्द की महिमा गान करके माता गायत्री के नवें आयाम एवं नवें रूप की अर्चना करने का है। तो प्रचोदयात् शब्द में प्रेरित करने, उन्नयन करने के भाव समाए हैं। हालांकि प्रेरित तो हम सदा होते हैं पर प्रश्न यह है कि हमें प्रेरित करता कौन है- अंधकार अथवा प्रकाश, असुर अथवा देवता। और फिर प्रेरित करके हमें ले कहाँ जा रहा है- घोर अंधेरे में अथवा घनीभूत प्रकाश में। क्योंकि प्रेरित होने से ही हमारे जीवन के समस्त परिवर्तन सम्भव होते हैं।

ऋषि वशिष्ठ एवं विश्वामित्र से प्रेरित होकर राजपुत्र राम- मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम हो गए। जबकि ऋषिपुत्र रावण अपनी असुर माता कैकसी से प्रेरित होकर अपनी कठोर साधना करके एवं दुर्लभ वरदान पाकर भी राक्षस हो गया। यहाँ गायत्री महामंत्र की साधना करने वाले साधक के प्रेरक तो सविता देव हैं, जो उसे प्रेरित कर अपनी दिव्यता प्रदान करके उसे देवस्वरूप प्रदान करते हैं। यही 'प्रचोदयात्' शब्द की महिमा व गायत्री साधना की सम्पूर्णता है।

हृदय से हृदय तक

सुखद विषयों का स्मरण किसे नहीं हर्षित करेगा और जब परमपुरुष के जन्मोत्सव, उनकी लीलाओं के स्मरण का क्षण आये तो हृदय में होने वाले हर्ष, आनंद का तो कोई पारावार ही नहीं होगा। २६ अगस्त, भाद्रपद माह के कृष्णपक्ष की अष्टमी को जन्माष्टमी का आनंदोत्सव है। यह पर्व कई रूपों में विशिष्ट ही नहीं, अतिविशिष्ट है। जन्माष्टमी सामान्य व्यक्ति से लेकर महान साधकों, सिद्धों, योगियों के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसीलिए इसे महारात्रि भी कहा जाता है। इस रात्रि को भगवान कृष्ण के पूजन के साथ अनेक आध्यात्मिक साधनाऐं भी संपन्न की जाती हैं। साथ ही इस महापर्व का दर्शन भगवान कृष्ण के कर्मयोग से जुड़ा हुआ है। इस पर्व का सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्वरूप तो लोकविख्यात है ही।

भगवान कृष्ण का अवतार इसी महारात्रि के विशिष्ट क्षणों में हुआ था जो उन्हें अवतारी चेतना की ओर निर्दिष्ट करती है और साथ ही जीवनपर्यंत चलने वाले संघर्षों में उनकी विजयगाथा का उद्‌घोष भी करती है। भगवान कृष्ण का जीवन विविधताओं, विशेषताओं और अद्‌भुत गूढ़ताओं से भरा पड़ा है। ऐसा इसलिए क्योंकि वे एक साथ जीवन के विभिन्न तलों को न केवल जीते थे, बल्कि अधिकारपूर्वक जीते थे। शौर्य और साहस विषम परिस्थितियों में और भी प्रखरता से प्रदर्शित होते थे और उनकी कालजयी मुस्कान उनके आसपास के विषाद को हर लेती थी। योग और अध्यात्म की दृष्टि से उनका जीवन पराकाष्ठा पर था। यही वैराग्य उनके जीवन का सर्वोपरि सौंदर्य था। उनके द्वारा निष्काम कर्मयोग की खोज इस जगत के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। वे कर्मयोगी तथा कर्म से निवृत्त प्रखर संन्यासी, दोनों ही एक साथ थे।

अन्य किसी भी अवतार ने उनके जैसे जीवन के इतने विविध आयामों को कभी नहीं छुआ और न ही जीया। वे एक पूर्ण पुरुष थे। उनकी पूर्णता एवं पारंगता अद्‌भुत थी। एक तरफ वे तपस्वी, सिद्ध, संत, वैरागी तथा अध्यात्म पुरुष थे तो वहीं दूसरी ओर उनके अर्जुन के सखा, उद्धव के आचार्य, सुदामा के सहचर, गोपियों के स्वामी स्वरूप का भी दर्शन होता है। अंसभव को संभव करना तो जैसे उनका नैसर्गिक स्वभाव थे। महाभारत के महायुद्ध के बीच अर्जुन को गीता का उपदेश देना उनके इसी अनोखे स्वभाव को दर्शाता है। युद्धभूमि में सम्यक् ज्ञान का उपदेशन देना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। वे ज्ञान की ज्वलंत मशाल थे। पिता वसुदेव एवं उद्धव को उन्होंने इसका बोध कराया। एक तरफ द्वादकाधीश होकर भी मित्र सुदामा को यथोचित सम्मान देना तो दूसरी ओर राजसूय यज्ञ में ब्राह्मणों का पादप्रक्षालन करना उनकी इसी विशेषता को दर्शाता है।

भगवान कृष्ण का बचपन से लेकर अंत तक का जीवन प्रेरणाओं और शिक्षाओं से अटा पड़ा है। इसमें हरेक अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पा सकता है। उनकी गायी हुई गीता तो सर्वकालीन सामयिक है, जिसके प्रकाश में हर युग में हर कोई अपने जीवन की समस्याओं के बारे में एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण और समाधान प्राप्त कर सकता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का यह पावन उत्सव आप सभी उत्साहपूर्वक यथाशक्ति विधिविधान से भक्ति भाव से मनायें और उनकी प्रेरणाओं को जीवन में उतारें। जीवन संग्राम में योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन स्वर हम सभी के हृदयों मे गुंजायमान हों और विजयपथ प्रशस्त करें, इसी शुभकामना के साथ।

अरुण कुमार जायसवाल

JEALOUSY

It is commonly believed that it is always a man's ego and a woman's jealousy that leads to doomsday. Men are born with egos and women are inherently jealous is something of a natural attribute that has been so far from the understanding of one of the basic gender differentiations. But it isn't true in entirety and though proven in some historical cases and facts- the truth is a mixed one. Women too have egos and men are equally capable of being jealous. Wars have been waged when egos have been bruised and great empires reduced to dust because of the jealousies of petty rulers who could not see beyond themselves.

While egos destroy one's own self, the power of destruction that jealousy bears are unfathomable. Women have destroyed and killed other women simply because they could not tolerate another woman gaining more recognition than them in whichever way. Men have crushed dynasties because they grew jealous and were so consumed by the vileness of it that they have gone to great extent to burn everything of their very own that their ancestors gained over centuries.

The Mahabharata is a great text when it comes to understanding how jealousy leads to mistrust and wariness. The character of an uncle, Shakuni is always in secret, unacknowledged awe of the Pandavas. Their valor, beauty and goodness become a major obstacle for this maternal relative who wants his own undeserving and cruel nephew to gain prominence and the coveted throne. The Ramayana is replete with how the most beautiful and the youngest queen of the noble king, Dashrath sends her stepson to exile because she is jealous of the thought of him becoming the king instead of her son. The epitomic lessons to be learnt from every epic is not always the outcome of the good triumphing over the evil but to acquire an understanding of the very reasons that caused rifts, upheavals and the final destruction of an innocent age. Victory that comes with a win always sows huge collateral within it.

Shortly after the triumphant return from Lanka, the pregnant queen of Ayodhya is made to go through a trial of fire and banished to a forest exile. When the Pandavas win the great and significant war, the success is not so sweet because they have lost too many dear ones in the battlefield. And even though they were on the righteous side, the fact of the memory of that game of dice and their lack of self-control, total callousness and discretion never deserts them.

All these episodes from the epics direct us to the fact that they all stemmed out of many things but primarily it was jealousy that demolished the peace and prosperity of both the individual and space.

Jealousy must never be underestimated. It can cause perfect devastation and destroy lives. Jealousy is often more disparaging to the other person more than to the person who is consumed by it. It is a huge detriment.

Instead of being jealous, the Buddhist concept and feeling of 'Mudita' needs to be practiced. It means to be happier than the other person who possesses wonderful qualities and has great achievements. The only way to overcome the negativity is by nurturing the quality of 'Mudita.' To be extremely happy in another person's happiness, more than the person experiencing it and be forever inspired to imbibe the same goodness.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

इंसान और भगवान

इस संसार में जो सबसे प्यारा संबंध है वह है इंसान का भगवान से । यह संबंध इंसान के लिए परम कल्याणकारी है । माता-पिता, तथा अन्य रिश्ते - नातों का संबंध तो प्यारा है ही परन्तु उन संबंधों के पीछे प्रत्यक्षता का ताना -बाना है । इस क्षणभंगुर संसार में कोई भी रिश्तेदार हमेशा के लिए हमारे साथ नहीं रह सकते । पर जब हम ईश्वर से प्यार करते हैं और करते चले जाते हैं तो एक बहुत ही मधुर रिश्ते का विकास होता है जो कभी खत्म नहीं होता है उल्टे यह संबंध जितना गाढा होता है उतना खूबसूरत होता जाता है न केवल अपने लिए अपितु सारे संसार के लिए भी । एक भक्त अपने प्यारे भगवान की सृष्टि के साथ मन से एकाकार हो जाता है क्योंकि वह सारी सृष्टि में अपने रिश्ते-नातों को भी भगवान में ही देखता है । वह मानता है कि भगवान की लीला ही यह संसार है । जिस कारण किसी से नफरत - विद्वेष नहीं बस हर किसी से प्यार, प्यार और प्यार उसके जीवन का उद्देश्य बन जाता है ।

कोई फर्क नहीं पड.ता कि उसके भगवान दृश्य हैं कि अदृश्य । उन अदृश्य के प्रति दृश्य का अखंड विश्वास अपनी आत्मा के प्रति विश्वास को दृढ करता जाता है जो उसे सुंदर बनाते चले जाते हैं । अपने आराध्य के पास बैठे रहने के कारण उस इंसान में वे सारे गुण अनायास ही विकसित होते रहते हैं जो भगवान के सहज गुण हैं । उदारता, करुणा, ममता, प्रेम, सकारात्मकता, भक्ति, ज्ञान, कर्म, आस्तिकता, सहजता, परोपकार, सेवा, भोलापन, निर्मलता, सादगी आदि समस्त गुणों से इंसान सजने लगता है । उसका श्रृंगार दैवी गुणों से होने लगता है और जहाँ दैवी गुण विकसित होने लगते हैं वहाँ देवत्व की सुगंध आने लगती है । हमारे समस्त रिश्ते - नाते भी इंसान हैं और इंसान गुण - दोषों का पुतला होता है । इसलिए उनसे हम जितना प्रेम करते हैं उतना हम उनके गुण और दोषों को भी धीरे - धीरे अपने ऊपर ओढने लगते हैं और वैसे ही बनते चले जाते हैं । परन्तु इंसान की जब भगवान से दोस्ती होती है तब वह भगवान की तरह गुण और दोषों से परे होने लगता है । दोस्ती जिससे होती है व्यक्तिव वैसा ही ढलने लगता है । प्रेम जिससे अधिक होता है अंतर्मन उसी के गुणों से सजने लगता है ।

भगवान और इंसाान का संबंध दूध और पानी की तरह है । जीव पानी तो भगवान दूध पर दूध के साथ पानी जब मिल जाता है तब पानी पानी कहाँ दिखता है वह तो दूध की तरह उजला और मीठा हो जाता है । कहते हैं – "सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्' अर्थात् सत्संगति कहो क्या नहीं करती ? सच, सत्संगति यही करती है कि इंसान को इंसान नहीं भगवान के साथ उठने - बैठने लायक बना देती है । और क्या चााहिए इंसान को ? उसे भगवत्ता चाहिए, सद्गति चाहिए, मुक्ति चाहिए और व्यक्तिव का परिष्कार भी चाहिए । यह सब इंसान की मुट्ठी में होता है जब उसका प्रेम भगवान से होता है । वह संसार की उल-जलूल चाहतों से बहुत दूर होता चला जाता है । उसके दिल में भगवान, उसकी साँसों में भगवान, उसके नस - नस में भगवान, उसके मन में भगवान, उसके चारों तरफ भगवान, उसकी वाणी में भगवान, उसके आचाार - विचार में भगवान, उसकी हँसी मे भगवान, उसके रूदन में भगवान, उसकी चमक में भगवान, उसकी खनक में भगवान, उसके कर्त्तव्यों में भगवान, उसकी गति में भगवान हर तरफ भगवान ही भगवान । सच, भगवान की दोस्ती से, भगवान के प्रति असीम प्रेम से इंसान क्या से क्या हो जाता है ? भगवान रूपी पारस से भक्त लोहे से सोना बन जाता है । सच, उसका सारा जीवन ही बदल जाता है । वह एक सच्चा इंसान, प्यारा इंसान, कल्याणकारी इंसान बनता चला जाता है । न उससे किसी को दुःख होता है न ही वह किसी के दुःख का कारण बनता है । क्या आज ऐसे ही इंसान की जरूरत समस्त मानवजाति को नहीं है ? आज इंसानियत समाप्त हो रही है । इंसान राह न भटकें इसलिए इंसान को भगवान के साथ जुड.ने की आवश्यकता है । भगवान का आचरण, भगवान का व्यवहार सबमें उतरता चला जाए तो फिर भक्त और भगवान का सुन्दर सम्बन्ध सारे संसार को सुन्दर बना सकता है ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **संस्कृति का अर्थ है परिष्कृति, शुद्धि। मतलब आप अपने को जितना संवारते हो, गढ़ते हो, तरासते हो उतना आप सुसंस्कृत होते हो।**
- **अंदर से बाहर तक खान-पान ,रहन-सहन,वेश- विन्यास कहना चाहिए चरित्र ,चिंतन और व्यवहार इन तीनों आयामों को सुधार लेना,संवार लेना, परिष्कृत कर लेना यह सुसंस्कृत होना है। यह व्यक्ति ने किया, परिवार ने किया, समूह ने किया ,उसके बाद यह संस्कृति पीढ़ियों में जाने लगती है,ढलने लगती है तो सभ्यता हो जाती है। हम कह सकते हैं कि जीवन मूल्य ही संस्कृति है।**
- **भारतीय संस्कृति का मतलब वह तौर-तरीके,वह मूल्य, वह मानक ,वह आदर्श जो भारत की धरती पर विकसित हुए।**
- **आर्य का मतलब होता है श्रेष्ठ मनुष्य ।हम वो लोग हैं जो युद्ध में भी नीतियों और नियमों को मानते हैं। एवरीथिंग इज फेयर इन लव एंड वॉर ,यह विदेशी सभ्यता का मानक है ।हमारे यहां एवरीथिंग इज फेयर इन लव एंड वॉर नहीं है, हम लव एंड वॉर दोनों में अपने सांस्कृतिक मूल्य को रखते हैं।**
- **भारतीय संस्कृति मनुष्य से मनुष्यत्व ही नहीं, देवत्व ही नहीं, ऋषित्व तक ले जाती है।**
- **व्यास ऋषि ने क्या कहा ?पहले हम मनुष्य हो जाएं ,हमारे यहां मनुष्यता सर्वोच्च मानक है।**
- **भारतीय संस्कृति का ज्ञान इसलिए जरूरी है कि भारतीय संस्कृति हमें संपूर्ण मनुष्य का परिचय देती है, संपूर्ण मानवता का परिचय देती है।**
- **प्रकृति ने इस ब्रह्मांड में सबसे सुंदर रचना बनाई धरती और धरती में सबसे सर्वोत्तम जगह बनाई भारत। सर्वोत्तम का मतलब समूची धरती एक साथ भारत में प्रतिबिंबित हो ।यही नहीं ये रहस्य पूर्ण है ,अनेक विधआओं-कलाओं का रहस्य है इस भारत में।**
- **कहते हैं कि यह धरती स्वयं ही ब्रह्मांड का तीर्थ स्थल है और इस धरती का तीर्थ स्थल है भारत ।इसलिए इस धरती के लिए सभी आकर्षित होते हैं नाग, यक्ष, किन्नर, असुर ,देवता । हर कोई अपने लिए मोक्ष चाहता है जो इस धरती लोक पर ही संभव है।**
- **जब किसी जीव को पूर्णता प्राप्त करनी होती है तो चाहता है कि मेरा जन्म भारत की धरती पर हो और हम पूर्ण मनुष्य बनें। भारत में मनुष्य के गुणों का ही नहीं मनुष्य की संपूर्ण चेतना का प्रकाश फैला है।**
- **जहां प्रतिभा है ,जहां संस्कार है, जहां हृदय है, जहां भावना है ,जहां संवेदना है वह धरती भारत की धरती है।**
- **हमारे जीवन का निकृष्टतम मूल्य क्या है? स्वार्थ और अहंकार ।श्रेष्ठतम मूल्य क्या है ?स्वार्थ और अहंकार का त्याग।**
- **अगर हमें संपूर्ण मनुष्य बनना है, मनुष्यता का पूर्ण सुगंधित कमल खिलाना है,तो यह भारतीय संस्कृति का ज्ञान होने पर ही संभव है।**
- **भारतीय संस्कृति का ज्ञान नहीं होने पर मनुष्यता लूल्ही, लंगड़ी ,अपंग हो जाएगी ।आज का मनुष्य दिमागी तौर पर अपाहिज है ।उसका एकमात्र समाधान भारतीय संस्कृति का ज्ञान है।**
- **मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी क्षमता, सबसे बड़ी सामर्थ्य और ऐसा सामर्थ्य जो परमेश्वर को झकझोर देता है ,जो परमेश्वर को खींच लाता है ,वह हृदय है।**
- **मानवीय सभ्यता में शायद ही ऐसा कोई काल आया हो, शायद ही ऐसे कोई बिरले मनुष्य पैदा हुए हों, जिन्होंने हृदय का उपयोग किया है।**

- हृदय ही एक ऐसा सामर्थ्य है जिसका उपयोग करने से मनुष्य और भगवान साथ-साथ रह सकते हैं। मस्तिष्क का सामर्थ्य उपयोग करने से मनुष्य और भगवान साथ-साथ नहीं रह सकते। हां! मनुष्य और संसार साथ-साथ रह सकते हैं।
- सुनता कौन है ?आप कहेंगे कान सुनता है ।कान से आवाज मस्तिष्क में गई, यह सही बोल रहा है, यह गलत बोल रहा है ,मस्तिष्क निर्णय में लग गया, अब वह सुन नहीं रहा है। मन कहेगा चलो कुछ बोला जाए, सच्चाई यह है कि मन भी नहीं सुन रहा है, अगर बात कान से हृदय में जाए, तो बात जिस भाव से कही जा रही है, पूरी की पूरी उतर जाती है। तो हमेशा हृदय सुनता है।
- हमारी जीवन प्रणाली है जटिल और बहुत आसान भी। बुद्धि से चलेंगे तो जटिल और हृदय से चलेंगे तो आसान।
- आज ईमानदारी नहीं सिखाई जाती ,नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे यह नहीं सिखाया जाता ।
- हृदय उजागर क्यों नहीं होता ?हृदय की संपदा आध्यात्मिक संपदा है ,सांसारिक संपदा से मेल नहीं खाती, सांसारिक नियमों से मेल नहीं खाती। अहंकार के कारण हृदय की क्षमता उजागर नहीं हो पाती। हृदय की क्षमता बहुत सीधी'सरल है और उसको प्रकट करने का सबसे सीधा और सरल माध्यम है- प्रार्थना।
- परमेश्वर के सामर्थ्य को पराजित करने का बल किसी में नहीं है ,क्योंकि भगवान सभी बलों का स्रोत है।
- सामान्य दृष्टि से अगर सोचें कि हम हृदय का उपयोग करते हैं तो निश्चित रूप से जीवन में तृप्त होते चले जाएंगे यानि जीवन में संतुष्टि को पाएंगे ।सिर्फ बुद्धि का उपयोग करने वाले जीवन में अतृप्त रह जाते हैं ,अधूरे रह जाते हैं इसलिए हारे हुए लगते हैं।
- शरीर में सबसे कम समझी जाने वाली और पहचानी जाने वाली चीज नाभि है ।इसको कोई नहीं पहचानता है, इसलिए रोगी रहते हैं ।अगर नाभि को हम जान जाएंगे तो हम बीमार नहीं पड़ेंगे।
- नाभि से पूरे शरीर का तार बुना रहता है, नाभि केंद्र है शरीर का ।इससे शरीर का संचालन आप कर सकते हैं। इस बात को आज कोई नहीं समझता है।
- मनुष्य जीवन का सबसे कंसंट्रेट पार्ट ,शरीर का सबसे संघनित हिस्सा है चित्त ।
- चित्त का हृदय में वास, स्थान होता है। चित्त ना हो तो क्या बचेगा? केवल चेतना ,शुद्ध सत्व वही अवस्था आ जाएगी।
- चित्त के विलीन होने पर केवल परात्पर चेतना रह जाती है। चित्त की विलीनता का मतलब है ,चित्त शुद्धि का मतलब है ना कोई कर्म ,ना कोई संस्कार, ना कोई संबंध ना कोई संसार।
- गुरु पूर्णिमा शब्द में गुरु जुड़ा हुआ है और पूर्णिमा जुड़ा हुआ है ।गुरु प्रेरक होता है, प्रवर्तक होता है। गुरु वह होता है जो आपका रूपांतरण कर दे, बदल दे आपको ,आकृति वही रहे प्रकृति बदल दे। जो आकृति को यथावत रखते हुए प्रकृति को बदलने की सामर्थ्य रखता है वही गुरु होता है।
- चैत्र की पूर्णिमा, बैशाख की पूर्णिमा, जेठ की पूर्णिमा के बाद आषाढ़ की पूर्णिमा आती है। तीन महीने के घोर तपन के बाद चौथे महीने आती है। यानि शिष्य के जीवन में अभीप्सा जगाती है,आकांक्षा जगती है ,उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए अभिलाषा जगती है ।उसकी प्रार्थना, उसकी तपन ,उसकी ख्वाहिश, उसकी तितिक्षा ,उसका तप जब अपने चरम पर पहुंचता है तो अंतरिक्ष से मेघ पकड़ लाता है ,फिर आषाढ़ की पूर्णिमा ईश्वरीय करुणा की तरह बरसती है।
- आषाढ़ में केवल मेघ उमड़ते - घुमड़ते नहीं हैं, प्रकृति से जीवन को अजस्र अनुदान प्राप्त होते हैं।
- गुरु हमें उस पूर्णता का एहसास दिलाता है, अनुभव कराता है कि तुम भी पूर्ण हो। परमात्मा पूर्ण, हम भी पूर्ण, तुम भी पूर्ण। यही एहसास, यही अनुभूति गुरु पूर्णिमा है।
- गुरु परमात्मा की करुणा का साकार रूप होता है। यहां एक बात ध्यान देने की है- परमात्मा बड़ा या परमात्मा की करुणा बड़ी? तो पीड़ितों के लिए तो करुणा बड़ी होती है। इसलिए गुरु को परमात्मा से बड़ा कहा जाता है।

- परमात्मा तो विधान के अनुसार करेगा और गुरु तो करुणा के अनुसार करेगा। गुरु के करने से सब हो जाता है ।गुरु सांसे लौटा देता है जीवन की।
- गुरु एक झरोखा होता है ।जैसे खिड़की से हम आकाश को देख सकते हैं, उस झरोखे से हम अनंत को निहार सकते हैं, जान सकते हैं। खिड़की अनंत आकाश नहीं है, परंतु खिड़की से अनंत आकाश दिख सकता है। जिस झरोखे से आप अनंत आकाश को झांक सको ,वही गुरु है।

जिज्ञासा

प्रश्न:- गांव- घर में एक चीज देखने को मिलती है -जब गोसाई की पूजा की जाती है तो पूजा पूजने वाले कितने में वह शक्ति ,वह देवता आ जाते हैं। क्या यह सही है या कोई पाखंड?

उत्तर: - कैसे कहा जाए कि यह पाखंड है ?कभी-कभी किसी में सही आवेश तो आता है ।अब वह किसी देवता का है या आसपास के किसी प्रेत शक्ति का है, दूसरी बात है। देवता आते हैं,तो वह कोई सूर्य-चंद्र-वरुण की तरह तो होते नहीं हैं ,वह देवता होते हैं ।आसपास कोई मर गया है, वह देव- पितर बनते हैं ।स्थान देवता होते हैं, उत्तराखंड में पहाड़ में गोलू देवता हैं, उनकी बहुत मान्यता है। राजस्थान में एक बहुत बड़े योद्धा थे गोगा पीड। वह मर गए तो पीड बन गए। वह आ जाते हैं ,यह हमारी मान्यता है। उनको हम देवता कह भी सकते हैं, नहीं भी कह सकते हैं ।पर यह कह सकते हैं कि कोई न कोई आवेश उनमें आ जाता है। पर कभी-कभी केवल पाखंड होता है ।अधिकांश पाखंड ही होता है ,मनोरोग भी होता है ।

प्रश्न:- क्या जीवन में आगे बढ़ाने के लिए सब कुछ त्यागना जरूरी है ? क्या जीवन में एक भी संघर्ष आसान होता है?

उत्तर: - आगे बढ़ने का मतलब क्या है? आगे आप कहां बढ़ना चाहते हैं? आप आईएएस बनना चाहते हैं ,डॉक्टर बनना चाहते हैं ,इंजीनियर बनना चाहते हैं ।जो आपका लक्ष्य है, उस लक्ष्य के विपरीत अवरोध जो है ,उनको तो आपको जरूर छोड़ना पड़ेगा ।पढ़ाई तो करनी पड़ेगी ,पार्टी तो छोड़नी पड़ेगी। सब कुछ त्यागना जरूरी नहीं है प्राण थोड़े ही त्यागना है ।आपके लक्ष्य में जो बाधा है उसको त्यागना है ।आपको समय चाहिए ,एकाग्रता चाहिए , स्थिरता चाहिए ,उसको तो करना ही पड़ेगा। जहां तक संघर्ष की बात है, जीवन में कोई भी संघर्ष आसान नहीं होता। संघर्ष किसको अच्छा लगता है, परंतु करना पड़ता है। संघर्ष का परिणाम मनोनुकूल मिलता है तो संघर्ष अच्छा लगने लगता है, जिसको अच्छा लगता है वह जीवन की ऊंचाई को छू लेता है ।एक बात हमेशा ध्यान रखें इच्छाएं पूरी नहीं होती है, यहां पर कर्म पूरा होता है। लक्ष्य के लिए सुख सुविधा छोड़नी पड़ती है। मैडम क्यूरी वैज्ञानिक थी, आइंस्टीन वैज्ञानिक थे, जिस समय अपने एक्सपेरिमेंट में लगे थे ,बहुत सारी चीजें छोड़ दी थी। समस्या छोड़ना- पकड़ना नहीं है, इसमें एक और बारीक सत्य है आपका मन कितनी जगह रह सकता है? एक ही जगह रह सकता है।

जुलाई माह की गतिविधियाँ

प्रज्ञेश्वर महादेव, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

नर में नारायण को भोजन प्रसाद कराने का सौभाग्य प्राप्त करता गायत्री परिवार, सहरसा

दिनांक 07--04--2024, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल ब्रिगेडियर समरेश मल्होत्रा ,इंटेलिजेंस सेना भवन"दिल्ली"के द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर खगड़िया के न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्र0सिंह, उपस्थित थे।कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने संस्कृति के संबंध में कहा-संस्कृति परिष्कृति है, शुद्धि है।जीवन में जितनी पवित्रता एवं शुद्धता आयेगी जीवन उतना हीं सम्हलेगा। चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधारलेना हीं संस्कृति है। श्रेष्ठ मनुष्य वे होते है जिनका आचरण और व्यवहार अच्छा होता है।आर्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं। इस अवसर पर सेना विभाग दिल्ली के ब्रिगेडियर समरेश मल्होत्रा ने कहा-मानवता सबसे बड़ा धर्म है।हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है।सभी अपने अपने धर्में का पालन कर सकते हैं,परन्तु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।इस अवसर पर सहरसा जिला के पांच प्रखंड -कहरा,सौरबाजार ,सिमरी बख्तियारपुर, सोनवरसा से आये विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला स्तर एवं प्रखंड स्तर पर सफल छात्र एवं छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

प्रतिदिन की तरह आज भी जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण करते गायत्री परिवार, सहरसा

दिनांक 14--07--24 को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा मनुष्य का सबसे बड़ा सामर्थ्य हृदय होता है। आज के दौर में मानव मस्तिष्क का उपयोग भरपूर हो रहा है लेकिन आज तक मानव हृदय का उपयोग नहीं किया गया है।मानवीय सभ्यता में शायद हीं ऐसा काल आया हो,शायद ही कोई विरले मनुष्य पैदा हुए हों,जिन्होने हृदय का उपयोग किया है। के सामर्थ्य का उपयोग यदि किया जाता तो घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में इतनी बुराईयां,लड़ाइयां नहीं होती।यही एक सामर्थ्य है जिसका उपयोग करने से मनुष्य और भगवान साथ-साथ रह सकते हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथिगण के रूप में उपस्थित आयरलैंड से आए योगेश भट्ट, (आईटी इंजीनियर) जी ने भी सत्र को संबोधित करते हुए कहा-यहां का माहौल मुझे अच्छा लगा,अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ। शालिनी भट्ट ने कहा-यहां के बच्चों को अच्छी शिक्षा अच्छे संस्कार दी जाती हैं। यहां के सारे व्यक्ति सेवा भाव से काम करते हैं।इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए, जिसमें अन्नप्राशन तथा विवाह दिवस संस्कार महत्वपूर्ण थे।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पूजन करते श्रद्धालु

पूजन कराती देव कन्याएं...

भोजन प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु...

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ,सहरसा द्वारा पौधा वितरण...

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल...

गुरु दीक्षा लेते श्रद्धालु...

देव स्थापना

आरती लेते श्रद्धालु....

अवधेश कुमार रॉय एवम उनकी धर्म पत्नी पद्मावती गाजीपुर से, पुत्री नीलम कुमारी, गुड़गांव से, उनके पौत्र आयुष कुमार,पौत्र वधु शालिनी रॉय बड़ोदरा से सपरिवार पूजन में शामिल हुए साथ ही गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के युवती मंडल की मनीषा के पति सौरभ कुमार दिल्ली से गुरु पूजन में शामिल हुए

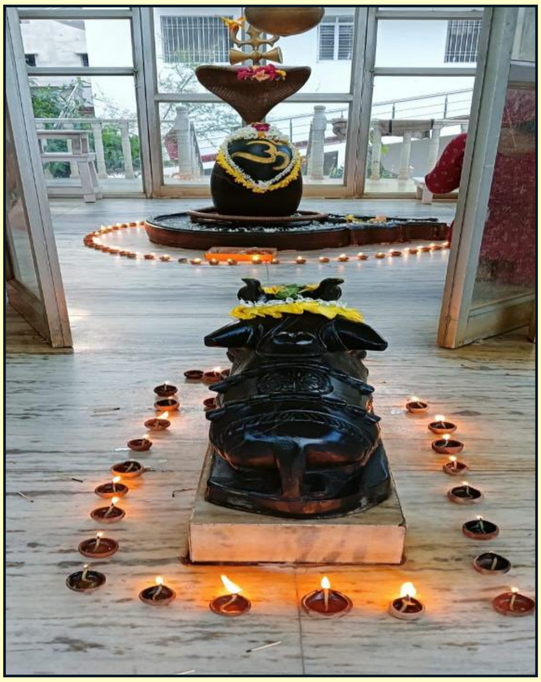

गुरुओ के गुरु,देवो के देव-महादेव और भक्तों के भक्त नन्दी...अनवरत भक्ति प्रवाह....

चरणपीठ

आदिशक्ति गायत्री माँ के साथ ...पूज्य गुरुदेव और वन्दनीया माता जी

26 जुलाई को बुद्धा पब्लिक स्कूल में गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के द्वारा एक दिवसीय कार्यक्रम किया गया, जिसमें योग एवं नैतिक शिक्षा की बातें बताई गईं।

प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह आज दिनांक 28/07/2024 (रविवार) को मधेपुरा जिला के घैलाढ प्रखंड अंतर्गत भगवानपुर गांव में 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया। गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

सावन के दूसरे सोमवार को सायंकालीन शिवलिंग का श्रृंगार

प्रतिदिन ज़रूरतमंद को भोजन प्रसाद खिलाकर तृप्त करता और खिलाने में तृप्ति पाता गायत्री परिवार, सहरसा

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

संदेश: पवित्रता व शुद्धता से संवरता है जीवन

गायत्री शक्तिपीठ में छात्रों को संबोधित करते डा. जायसवाल।

सहरसा, निज संवाददाता। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा के द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर खगड़िया के न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्र. सिंह, उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर डा.अरुण कुमार जायसवाल ने संस्कृति के संबंध में कहा संस्कृति परिष्कृति है,शुद्धि है।

जीवन में जितनी पवित्रता एवं शुद्धता आएगी जीवन उतना ही सम्हलेगा। चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधारलेना हीं संस्कृति है। श्रेष्ठ मनुष्य वे होते है जिनका आचरण और व्यवहार अच्छा होता है।आर्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं।

इस अवसर पर सेना विभाग दिल्ली के ब्रिगेडियर ने कहा-मानवता सबसे बड़ा धर्म है।हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है।सभी अपने अपने धर्मं का पालन कर सकते हैं,परन्तु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

इस अवसर पर सहरसा जिला के कहरा,सौरबाजार,सिमरी बख्तियारपुर, सोनवरसा से आये विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया। वहीं जिला स्तर एवं प्रखंड स्तर पर सफल छात्र एवं छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना ही है संस्कृति : डा. अरुण

संस, जागरण • सहरसा : रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वाधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया।

संबोधित करते ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा •सौजन्य: शक्तिपीठ

दिल्ली से आए ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा के हाथों छात्र- छात्राओं को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल प्रदान किया गया। न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्रसाद सिंह आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डा. अरुण कुमार जायसवाल ने संस्कृति के संबंध में कहा कि संस्कृति परिष्कृति शुद्धि है। कहा कि चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना हीं संस्कृति है। भारतीय सेना के ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा ने कहा कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है। हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है। सभी अपने-अपने धर्म का पालन कर सकते हैं,परंतु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

जीवन में पवित्रता बेहद जरूरी : अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में सफल प्रतिभागियों को किया गया सम्मानित

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल दिल्ली से आए ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर खगड़िया के न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्रसाद सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

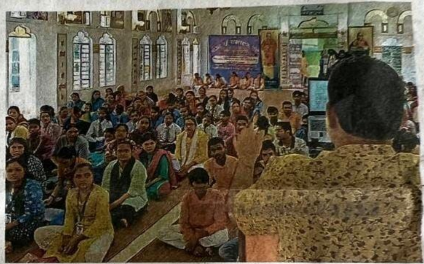

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. जायसवाल एवं उपस्थित लोग।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि संस्कृति परिष्कृति है,शुद्धी है। जीवन में जितनी पवित्रता एवं शुद्धता आएगी ,जीवन उतना ही सम्हलेगा। चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना ही संस्कृति है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ मनुष्य वे होते हैं जिनका आचरण और व्यवहार अच्छा होता है।आर्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं।

अपने संबोधन में ब्रिगेडियर मल्होत्रा ने कहा कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है।हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है। सभी अपने अपने धर्मों का पालन कर सकते हैं,परन्तु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।इस अवसर पर सहरसा जिला के पांच प्रखंड-कहरा,सौरबाजार ,सिमरी बख्तियारपुर , सोनवर्षा से आये विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया एवं सफल छात्र - छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

धर्म ▸ समाज ▸ संस्था

मनुष्य का सबसे बड़ा सामर्थ्य हृदय: डॉ अरूण जायसवाल

भास्कर न्यूज | सहरसा

मनुष्य का सबसे बड़ा सामर्थ्य हृदय होता है। आज के दौर में मानव मस्तिष्क का उपयोग भरपूर हो रहा है लेकिन आज तक मानव हृदय का उपयोग नहीं किया गया है। ये बातें स्थानीय गायत्री पीठ के ट्रस्टी डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि मानवीय सभ्यता में शायद हीं ऐसा काल आया हो, शायद ही कोई विरला मनुष्य पैदा हुए हों,जिन्होंने हृदय का उपयोग किया है। हृदय के सामर्थ्य का अगर उपयोग किया जाता तो घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में इतनी बुराईयां,लड़ाइयां नहीं होती। यही एक सामर्थ्य है जिसका उपयोग करने से मनुष्य और भगवान साथ-साथ रह सकते हैं।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथिगण के रूप में उपस्थित आईटी इंजीनियर योगेश भट्ट ने कहा कि यहां का माहौल मुझे अच्छा लगा,अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ। शालिनी भट्ट ने कहा कि यहां के बच्चों को अच्छी शिक्षा एवं अच्छे संस्कार दिए जाते हैं।यहां के सारे व्यक्ति सेवा भाव से काम करते हैं।इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,अन्नप्राशन तथा विवाह दिवस संस्कार आयोजित हुए।

सभ्यता के विकास में हृदय होता है सबसे बड़ा सामर्थ्य : अरुण

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा मनुष्य का सबसे बड़ा सामर्थ्य हृदय होता है। आज के दौर में मानव मस्तिष्क का उपयोग भरपूर हो रहा है, लेकिन आज तक मानव हृदय का उपयोग नहीं किया गया है। कहा कि मानवीय सभ्यता के विकास में शायद हीं ऐसा काल आया हो, शायद ही कोई ऐसा मनुष्य पैदा हुए हो, जिन्होंने हृदय का उपयोग किया है। हृदय के सामर्थ्य का अगर उपयोग किया जाता तो घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में इतनी बुराईयां, लड़ाइयां नहीं होती। यही एक सामर्थ्य है, जिसका उपयोग करते से मनुष्य भगवान साथ-साथ रह सकते हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में आयरलैंड से आए योगेश भट्ट ने कहा-यहां का माहौल मुझे अच्छा लगा। शालिनी भट्ट ने कहा कि यहां के बच्चों को अच्छी शिक्षा, संस्कार दी जाती है। यहां के सारे व्यक्ति सेवा भाव से काम करते हैं। इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार हुए।

संदेश: पवित्रता व शुद्धता से संवरता है जीवन

गायत्री शक्तिपीठ में छात्रों को संबोधित करते डा. जायसवाल।

सहरसा, निज संवाददाता। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा के द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर खगड़िया के न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्र. सिंह, उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर डा.अरुण कुमार जायसवाल ने संस्कृति के संबंध में कहा संस्कृति परिष्कृति है,शुद्धि है।

जीवन में जितनी पवित्रता एवं शुद्धता आएगी जीवन उतना ही सम्हलेगा। चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधारलेना हीं संस्कृति है। श्रेष्ठ मनुष्य वे होते है जिनका आचरण और व्यवहार अच्छा होता है।आर्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं।

इस अवसर पर सेना विभाग दिल्ली के ब्रिगेडियर ने कहा-मानवता सबसे बड़ा धर्म है।हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है।सभी अपने अपने धर्मं का पालन कर सकते हैं,परन्तु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

इस अवसर पर सहरसा जिला के कहरा,सौरबाजार,सिमरी बख्तियारपुर, सोनवरसा से आये विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया। वहीं जिला स्तर एवं प्रखंड स्तर पर सफल छात्र एवं छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

गुरु वे होते हैं जो आपका पूरी तरह रूपांतरण कर दें : अरुण कुमार

सहरसा| जो आकृति को यथावत रखते हुए प्रकृति को बदलने की सामर्थ्य रखता है, वही गुरु होते हैं। गुरु प्रेरक होता है, प्रवर्तक होता है, गुरु वो होता है जो आपका रूपांतरण कर दें, आपको बदल दें, आकृति वहीं रहे लेकिन प्रकृति बदल दें। ये बातें डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि गुरु पूर्णिमा शब्द में गुरु और पूर्णिमा जुड़ा हुआ है। अषाढ़ की पूर्णिमा ईश्वरीय करुणा की तरह बरसती है। आषाढ़ में केवल मेघ उमड़ते घुमड़ते नहीं है, प्रकृति से जीवन को अजस्र अनुदान प्राप्त होते हैं। गुरु पूर्णिमा के अवसर शक्तिपीठ में दिनभर अखंड जाप एंव संध्याकालीन दीप यज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। साथ ही इस अवसर पर लगभग 200 फलदार वृक्ष के पौधे बांटे गए। मौके पर गाजीपुर से पधारे अवधेश कुमार राय, उनकी पत्नी पद्मावती ,पुत्री नीलम कुमारी,पौत्र आयुष कुमार पौत्र वधु शालिनी राय सहित अन्य उपस्थित थे।

जीवन में पवित्रता बेहद जरूरी : अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में सफल प्रतिभागियों को किया गया सम्मानित

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल दिल्ली से आए ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर खगड़िया के न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्रसाद सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. जायसवाल एवं उपस्थित लोग।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि संस्कृति परिष्कृति है,शुद्धी है। जीवन में जितनी पवित्रता एवं शुद्धता आएगी ,जीवन उतना ही सम्हलेगा। चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना ही संस्कृति है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ मनुष्य वे होते हैं जिनका आचरण और व्यवहार अच्छा होता है।आर्य सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं।

अपने संबोधन में ब्रिगेडियर मल्होत्रा ने कहा कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है।हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है। सभी अपने अपने धर्मों का पालन कर सकते हैं,परन्तु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।इस अवसर पर सहरसा जिला के पांच प्रखंड-कहरा,सौरबाजार ,सिमरी बख्तियारपुर , सोनवर्षा से आये विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षकों को सम्मानित किया गया एवं सफल छात्र - छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

इंदिरा आइवीएफ के सहयोग से कल्याणी आइवीएफ सहरसा में होगा विश्व स्तरीय बांझपन का उपचार

- किया उद्घाटन, इंदिरा आईवीएफ क्षेत्र में प्रजनन देखभाल में सुधार के लिए करता है सहयोग

प्रतिनिधि, सौरबाजार

उद्घाटन करते अतिथि .

भारत में बांझपन उपचार अस्पतालों के सबसे बड़े नेटवर्क, इंदिरा आईवीएफ ने रविवार को सहरसा में कल्याणी आईवीएफ सेंटर के साथ अपने सहयोग की घोषणा की. सेंटर प्रमुख कल्याणी आईवीएफ सेंटर एवं सचिव डॉ कल्याणी सिंह ने बताया कि इस संयुक्त सेवा का उद्देश्य भारत में लगभग तीन से चार करोड़ निसंतान जोड़ों के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त प्रयास पर जोर देते अत्याधुनिक निसंतान समाधान व सेवाओं की उपलब्धता का विस्तार करना है. इसी उद्देश्य से रविवार को सहरसा में एक नये अत्याधुनिक प्रजनन उपचार केंद्र का उद्घाटन किया गया है. भारत में निसंतानता को खत्म करने के मिशन के साथ 2011 में स्थापित, इंदिरा आईवीएफ इस मुद्दे से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कई हितधारकों को शामिल करने वाले सहयोगी प्रयासों के महत्व को पहचानता है. इस गठबंधन के माध्यम से इंदिरा आईवीएफ और कल्याणी आईवीएफ सेंटर क्षेत्र एवं इसके पड़ोसी क्षेत्रों की आबादी को शीर्ष पायदान की तकनीक व उन्नत बुनियादी ढांचे की पेशकश करने के लिए समर्पित है. उद्घाटन समारोह में डॉ कल्याणी सिंह के साथ मुख्य अतिथि अरूण कुमार सिंह, हरनजीत सिंह, डॉ संतोष रमन, डॉ शुभम कुमार एवं इंदिरा आईवीएफ की ओर से सगफ़ इमाम मौजूद थे. डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि हमें क्षेत्र के निवासियों के लिए सर्वोत्तम श्रेणी के निःसंतानता उपचार पेश करने के लिए इंदिरा आईवीएफ के साथ जुड़कर खुशी हो रही है. मौके पर लार्ड बुद्धा मेडिकल कॉलेज के कार्यकारी निदेशक डॉ शुभम कुमार, अध्यक्ष तरनजीत सिंह, कोषाध्यक्ष हरनजीत सिंह, संस्थापक सदस्य गायत्री शक्ति पीठ अरुण जायसवाल मौजूद थे.

चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना ही है संस्कृति : डा. अरुण

संस, जागरण • सहरसा : रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सफल प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया।

संबोधित करते ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा •सौजन्य : शक्तिपीठ

दिल्ली से आए ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा के हाथों छात्र- छात्राओं को प्रमाणपत्र, पुरस्कार एवं मेडल प्रदान किया गया। न्यायाधीश शशांक कुमार, ट्रस्टी शुकदेव प्रसाद सिंह आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डा. अरुण कुमार जायसवाल ने संस्कृति के संबंध में कहा कि संस्कृति परिष्कृति शुद्धि है। कहा कि चिंतन, चरित्र, व्यवहार को सुधार लेना हीं संस्कृति है। भारतीय सेना के ब्रिगेडियर संवेश मल्होत्रा ने कहा कि मांनवता सबसे बड़ा धर्म है। हमारे यहां सर्व धर्म स्थल है। सभी अपने-अपने धर्म का पालन कर सकते हैं,परंतु देश की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

गलत रहन-सहन से नि:संतान दंपतियों की बढ़ रही संख्या

भास्कर न्यूज|सहरसा-सौर बाजार

आज की असंतुलित जीवन शैली, गलत खान-पान, रहन -सहन और दूषित होते वातावरण के कारण आज ज्यादातर दंपती को संतान सुख प्राप्त नहीं हो रहा है। देर से होने वाली शादियां भी इसका एक कारण है। ऐसे में संतान सुख के लिए जरूरी है कि समय पर शादी और जीवन शैली में समय रहते बदलाव लाएं। रविवार को शहर से सटे बैजनाथपुर स्थित लार्ड बुद्धा कोसी मेडिकल कॉलेज परिसर में कल्याणी आईवीएफ का इन्दिरा आईवीएफ के साथ ज्वाइंट वेंचर में किए गए उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. कल्याणी सिंह ने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि अब कल्याणी आईवीएफ और इन्दिरा आईवीएफ ज्वाइंट वेंचर का सेंटर बन गया है। कोसी क्षेत्र में ऐसे सेंटर की स्थापना हुई है जिससे अब लोगों को दूसरे बड़े शहरों में इलाज के लिए नहीं जाना पड़ेगा। विशिष्ट अतिथि गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि आज आईवीएफ सेंटर समय की मांग है। लार्ड बुद्धा शिक्षा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष तरणजीत सिंह, कोषाध्यक्ष हरणजीत सिंह भी मौके पर मौजूद रहे।

बैजनाथपुर में आईवीएफ सेंटर का उद्घाटन करते अतिथि।

गुरु वह है जो आपकी प्रकृति व विचार बदल दे

- गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित हुआ कार्यक्रम
- गुरु की महिमा के बारे में युवाओं को बताया गया

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में गुरू पूर्णिमा पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा गुरु पूर्णिमा शब्द में गुरु जुड़ा हुआ है और पूर्णिमा जुड़ा हुआ है। गुरु प्रेरक होता है, प्रवर्तक होता है, गुरु वो होता है जो आपका रूपांतरण कर दे, बदल दें आप को, आकृति वही रहे, प्रकृति बदल दें। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ की पूर्णिमा के बाद अषाढ़ की पूर्णिमा आती है। तीन महीने के घोर तपन के बाद चौथे महीने आती है। यानी शिष्य के जीवन में अकांक्षा जगती है, उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए अभिलाषा जगती है। उसकी प्रार्थना, उसकी तपन, उसकी ख्वाहिश, उसकी तितिक्षा, उसका तप जब अपने चरम पर पहुंचता है, तो अंतरिक्ष से मेघ पकड़ लाता है, फिर अषाढ़ की पूर्णिमा ईश्वरीय करुणा की तरह बरसती है। मौके पर अवधेश कुमार राय, पद्मावती, नीलम कुमारी, आयुष कुमार, शालिनी राय, मनीषा, सौरभ कुमार शामिल हुए।

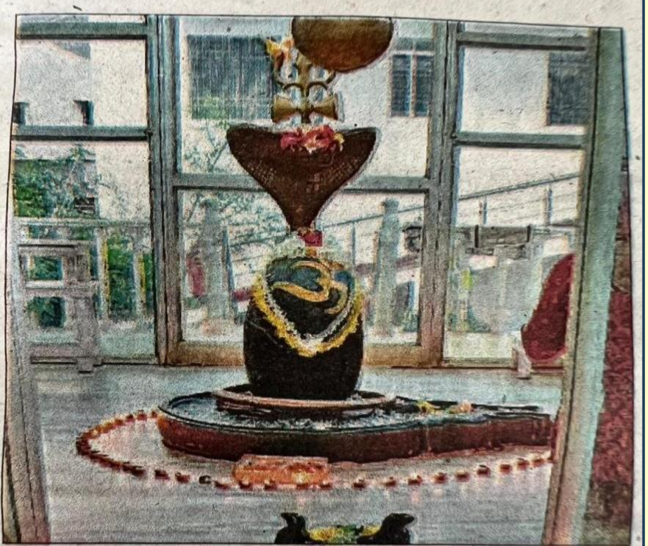

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सजाया गया गायत्री शक्तिपीठ स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव।

सहरसा:बांझपन का होगा इलाज

रविवार को आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि। ● हिन्दुस्तान

सहरसा, भारत में बांझपन उपचार अस्पतालों के सबसे बड़े नेटवर्क, इंदिरा आईवीएफ ने रविवार को सहरसा में कल्याणी आईवीएफ सेंटर के साथ अपने सहयोग की घोषणा किया। सेंटर प्रमुख कल्याणी आईवीएफ सेंटर एवं सचिव भगवान बुद्ध शिक्षा प्रतिष्ठान डॉ कल्याणी सिंह ने बताया कि इस संयुक्त सेवा का उद्देश्य भारत में लगभग तीन से चार करोड़ निःसंतानता जोड़ों के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त प्रयास पर जोर देते अत्याधुनिक निःसंतानता समाधान एवं सेवाओं की उपलब्धता का विस्तार करना है। इसी उद्देश्य से रविवार को सहरसा में एक नए अत्याधुनिक प्रजनन उपचार केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस गठबंधन के माध्यम से, इंदिरा आईवीएफ और कल्याणी आईवीएफ सेंटर क्षेत्र एवं इसके पड़ोसी क्षेत्रों की आबादी को शीर्ष पायदान की तकनीक व उन्नत बुनियादी ढांचे की पेशकश करने के लिए समर्पित है। उद्घाटन समारोह में डॉ कल्याणी सिंह के साथ मुख्य अतिथि अरूण कुमार सिंह, हरनजीत सिंह, डॉ संतोष रमन, डॉ सुभम कुमार एवं इंदिरा आईवीएफ की ओर से सगफ़ इमाम मौजूद थे।

जो आकृति को यथावत रखते हुए प्रकृति को बदलने की सामर्थ्य रखता है, वही होता है गुरु

कार्यक्रम में मौजूद श्रद्धालु.

सहरसा . गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को गुरु पूर्णिमा पर्व धूमधाम से मनाया गया . इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने गुरु पूर्णिमा के संबंध में कहा कि गुरु पूर्णिमा शब्द में गुरु व पूर्णिमा जुड़ा हुआ है . गुरु प्रेरक होते हैं, प्रवर्तक होते हैं. गुरु वो होते हैं जो आपका रूपांतरण कर दें, बदल दें . आकृति वही रहे, प्रकृति बदल दें . जो आकृति को यथावत रखते हुए प्रकृति को बदलने की सामर्थ्य रखता है, वही गुरु होता है . चैत्र की पूर्णिमा, बैशाख की पूर्णिमा, जेठ की पूर्णिमा के बाद अषाढ़ की पूर्णिमा आती है . तीन महीने के घोर तपन के बाद चौथे महीने गुरु पूर्णिमा आता है . यह शिष्य के जीवन में अभीप्सा जगाती है, अकांक्षा जगती है व उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए अभिलाषा जगती है . उसकी प्रार्थना, उसकी तपन, उसकी ख्वाहिश, उसका तप जब अपने चरम पर पहुंचता है तो अंतरिक्ष से मेघ पकड़ लाता है . फिर अषाढ़ की पूर्णिमा ईश्वरीय करुणा की तरह बरसती है . आषाढ़ में केवल मेघ उमड़ते घुमड़ते नहीं हैं . प्रकृति से जीवन को अजस्र अनुदान प्राप्त होता है . बाहरी प्रकृति को तो हमने देखा, तीन महीने तपन रही, चौथे महीने प्रकृति ने अनुदान बरसाये . यही स्थिति हमारे आंतरिक जीवन में है . जब तितिक्षा, तप, अभिप्सा प्रबल व प्रगाढ़ होती है तो प्रकृति गुरु प्रदान करती है . शक्तिपीठ में दिन भर अखंड जप हुए व संध्याकालीन दीप यज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ . लगभग दो सौ फलदार वृक्ष का पौधा बांटा गया . इस अवसर पर अवधेश कुमार राय उनकी पत्नी पद्मावती गाजीपुर से, पुत्री नीलम कुमारी गुड़गांव से, उनके पौत्र आयुष कुमार, पौत्र वधु शालिनी राय बडेदरा से सपरिवार पूजन में शामिल हुए

डाकबम का जत्था रवाना, सावन की पहली सोमवारी पर करेंगे जलाभिषेक

महिषी. मुख्यालय सहित क्षेत्र के विभिन्न जगहों से सैकड़ो डाक बम का जत्था गंगा घाट के लिए रवाना हुआ . महिषी, नहरवार, जजौरी, मैना, नाकुच सहित निकटवर्ती गांव के डाक बम कांवरिया मुंगेर के छर्रापट्टी से गंगा जल भर शाम को प्रस्थान करेंगे व रात भर पैदल चल भगवती उग्रतारा, तारा नाथ व संत बाबा कारू की तपस्थली नाकुच महादेव मंदिर में सावन की पहली सोमवारी को जलाभिषेक करेंगे. इसके अतिरिक्त सहरसा-दरभंगा सीमा क्षेत्र के कांवरिया सिमरिया में जल भर प्रसिद्ध बच्चेश्वर नाथ महादेव मंदिर में अभिषेक कर पूजा-अर्चना करेंगे.

भ्रामरी प्राणायाम करने के फायदे

भ्रामरी प्राणायाम तनाव कम करने का सबसे अच्छा तरीका है।

भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास मस्तिष्क को शांत बनाए रखता है।

हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को भ्रामरी प्राणायाम करना चाहिए।इस प्राणायाम को नियमित करने से शरीर का रक्तचाप कम होता है और हाई ब्लड प्रेशर से राहत मिलती है।

प्राणायाम करने से रात में बेहतर नींद आती है और तनाव कम होने लगता है। इसलिए रात्रिकालीन योग में इसे शामिल करना चाहिए।

पीनियल और पिट्यूटरी ग्रंथियों को उत्तेजित करके उन्हें लाभ पहुंचाने के लिए भ्रामरी प्राणायाम कर सकते हैं।

जिन लोगों को अधिक क्रोध आता है, उन्हें भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। इससे क्रोध शांत करने में मदद मिलती है।

भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास हार्ट ब्लॉकेज को रोकता है।

माह जुलाई में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- ब्रिगेडियर समरेश मल्होत्रा जी (इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट, सेना भवन, दिल्ली) :- रुद्राभिषेक, व्यक्तिव परिष्कार सत्र एवं यज्ञ

- योगेश भट्ट (आईटी इंजीनियर, आयरलैंड):- रुद्राभिषेक, व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ

- शालिनी (आईटी इंजीनियर, आयरलैंड):- रुद्राभिषेक, व्यक्तिव परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ

आगामी कार्यक्रम

- **15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस**
- **19 अगस्त रक्षाबंधन पर्व**
- **26 अगस्त श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व**
- **प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार परिष्कार सत्र की कक्षा आयोजित है**

भाव पथ

भारत हमारा प्राणों से प्यारा, सारे जग से यह तो न्यारा
सत्य, अहिंसा और प्रेम का, संदेश महान सबको यह देता ।।

हम सबकी है जन्मभूमि यह, राम, कृष्ण की कर्मभूमि यह
शिव पार्वती यहाँ पर आए, सीता-राधा यहाँ हैं खेलीं,
दिव्य महामानवों की धरती यह, दिव्यता की खेती कर गए
साधु-सन्त-महपुरूष सारे, इसकी मिट्टी को पावन कर गए ।।

पर समय के काल चक्र ने, भारत को दुर्दिन दिखलाया
फिर राष्ट्रसेवकों, महानायकों ने, भारत को शुभ दिन दिखलाया ।।
गाँधी, सुभाष और पटेल ने, आजादी का मन्त्र तब फूँका
भगत सिंह और बिस्मिल्ल ने, फाँसी का फन्दा तब चूमा ।।

अरविन्द घोष के जन्मदिन पर, 15 अगस्त को पाई आजादी
पर यह थी तन की आजादी, मन और आत्मा की थी बाकी ।।
आओ अरविन्द के उस स्वप्न को, हम सब मिल-जुल कर दें पूरा
देवसंस्कृति के इतिहास का परचम, लहराया नहीं तो यह अधूरा ।।

भोग-वासना ही नहीं जीवन, योग-अध्यात्म का पुनः हो संगम
बुद्ध-विवेका उतरें मन में, करुणा-उदारता हो जन-जन में ।।
ईश्वर-गुरु की अर्चना से, हो सर्जना पुनः नवल भारत की
भक्त, भक्ति और भगवान का, सख्य भाव उतरे यहाँ पर ।।

बहुत सो लिए अब तो जगें हम, ज्योति से ज्योति जलाएँ
अन्धकार से प्रकाश मार्ग पर, आगे बढें और बढते जाएँ ।।
सम्वेदना की बहाकर गंगा, प्रेम, करुणा के बीज हम बोएँ
सत्य, न्याय और धर्म की, त्रिवर्णी ध्वजा मनों में फहराएँ ।।

सतयुग की वापसी होगी ऐसे ही, जब भारत की आत्मा जगेगी
भारत जगा तो विश्व जगेगा, आत्मा-परमात्मा का रहस्य खुलेगा ।।
भारत को हम कहते माता, भारत माता के अश्रु हम पोंछें
मन और आत्मा पर चढी गुलामी, उसको आत्मबल से जीतें ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र	:	06478-228787, 9470454241
Email	:	gspsaharsa@gmail.com
Website	:	https://gsps.co.in/
Social Connect	:	https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/